



बिहार गजट

असाधारण अंक

बिहार सरकार द्वारा प्रकाशित

20 ज्येष्ठ 1937 (श0)
(सं0 पटना 633) पटना, बुधवार, 10 जून 2015

जल संसाधन विभाग

अधिसूचना
18 मई 2015

सं0 22/नि0सि0(सम0)—02—08/2009/1175—श्री अवधेश प्रसाद सिंह, तत्कालीन सहायक अभियंता, बाढ़ नियंत्रण प्रमंडल, दरभंगा के विरुद्ध उक्त प्रमंडलान्तर्गत वर्ष 2007—08 में प्रथम चरण में संपादित जमींदारी बाँधों के उच्चीकरण एवं सुदृढीकरण कार्य में बरती गयी अनियमितता की जाँच उड़नदस्ता अंचल, पटना से करायी गयी। उड़नदस्ता से प्राप्त जाँच प्रतिवेदन के विभागीय समीक्षोपरान्त कार्य में पायी गयी अनियमितता के लिए विभागीय पत्रांक 314 दिनांक 18.02.10 द्वारा श्री सिंह से स्पष्टीकरण पूछा गया। प्राप्त स्पष्टीकरण की समीक्षा सरकार के स्तर पर की गयी एवं सम्यक समीक्षोपरान्त प्रथम दृष्टया प्रमाणित आरोपों के लिए निम्न आरोप गठित करते हुए श्री अवधेश प्रसाद सिंह, सहायक अभियंता, बाढ़ नियंत्रण प्रमंडल, दरभंगा के विरुद्ध विभागीय संकल्प ज्ञापांक 103 दिनांक 28.01.11 द्वारा बिहार सरकारी सेवक (वर्गीकरण, नियंत्रण एवं अपील) नियमावली 2005 के नियम—17 के तहत विभागीय कार्यवाही प्रारम्भ की गयी:—

- जमींदारी बाँध के कार्यान्वयन हेतु दिये गये विभागीय निदेशों के आलोक में प्री लेवल की जाँच कराये बिना ही कार्य कराया गया।
 - बाँध का स्लोप विशिष्टि के अनुरूप नहीं पाया गया एवं बिना गुण नियंत्रण से जाँच कराये ही कार्यों का भुगतान किया गया है।
 - स्वीकृत प्राक्कलन में जंगल क्लीयरेंस हेतु अनुचित दर का प्रावधान किया गया है जिसके फलस्वरूप रु0 25361.00 राशि का अनियमित भुगतान के लिए आप दोषी हैं।
 - जाँच पदाधिकारी के द्वारा सूचित किये जाने बावजूद आपके द्वारा जाँच कार्य में सहयोग नहीं किया गया जिसके कारण कार्यों की पूर्ण जाँच नहीं की जा सकी।
- विभागीय कार्यवाही में संचालन पदाधिकारी द्वारा समर्पित जाँच प्रतिवेदन में आरोपों को प्रमाणित नहीं पाया गया। प्राप्त गजाँच प्रतिवेदन की समीक्षा सरकार के स्तर पर की गयी एवं सम्यक समीक्षोपरान्त जाँच प्रतिवेदन से असहमत होते हुए असहमति के निम्नांकित बिन्दुओं पर विभागीय पत्रांक 619 दिनांक 22.05.14 द्वारा श्री सिंह से द्वितीय कारण पृच्छा की गयी:—

1. संचालन पदाधिकारी द्वारा उड़नदस्ता के जाँच प्रतिवेदन में प्री लेवल की जाँच विभाग द्वारा गठित जाँच दल द्वारा किये जाने का उल्लेख के आधार पर बिना प्री लेवल की जाँच का ही कार्य कराने के आरोप को प्रमाणित नहीं माना गया है। परन्तु संदर्भित कोई साक्ष्य (जाँचित प्री लेवल बुक) न तो उड़नदस्ता दल एवं न ही आपके द्वारा

उपलब्ध कराया गया है। अतः साक्ष्य विहित तथ्य को स्वीकार योग्य नहीं माना जा सकता है। इस प्रकार संचालन पदाधिकारी के मंतव्य से असहमत होते हुए आपके विरुद्ध आरोप सं0-1 प्रमाणित होता है।

2. जमींदारी बाँध का कार्य राजस्थानी ट्रैक्टर से कराने, प्राक्कलन में **Compaction** मद का प्रावधान नहीं रहने के कारण मिट्टी के गुण नियंत्रण से जाँच का औचित्य नहीं होने तथा उड़नदस्ता द्वारा कराये गये कार्य पर कोई प्रतिकूल टिप्पणी नहीं करने, मिट्टी की गुणवत्ता की जाँच नहीं करने एवं पायी गयी भिन्नता मामूली एवं मान्य सीमा के अन्तर्गत माने जाने के आधार पर संचालन पदाधिकारी द्वारा आपके विरुद्ध आरोप सं0-2 प्रमाणित नहीं माना गया है। परन्तु जिससे सहमत नहीं हुआ जा सकता है। शाहपुर **P.W.D. Road** से बरहेता धरनी पट्टी तक जमींदारी बाँध के प्राक्कलन के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि इस बाँध में 10 अदद डबल भेट का पाईप कलबर्ट का प्रावधान है। उक्त संरचना में कंक्रीटिंग कार्य, ब्रीक वर्क तथा अन्य पक्का कार्य कराया गया है। उक्त कार्य का भी गुण नियंत्रण जाँच से संबंधित कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं है। अतः संचालन पदाधिकारी के मंतव्य से असहमत होते हुए बिना गुण नियंत्रण से जाँच कराये ही भुगतान करने का आरोप प्रमाणित होता है।

श्री सिंह से प्राप्त द्वितीय कारण पृच्छा के उत्तर की समीक्षा सरकार के स्तर पर की गयी एवं सम्यक समीक्षोपरान्त आरोप सं0-2 संरचना के कार्यों का भुगतान बिना गुण नियंत्रण जाँच कराये ही करने का आरोप प्रमाणित पाते हुए श्री सिंह को विभागीय अधिसूचना संख्या 1767 दिनांक 26.11.14 द्वारा निम्न दण्ड संसूचित किया गया:-

1. एक वेतनवृद्धि पर असंचयात्मक प्रभाव से रोक।

उक्त संसूचित दण्ड के विरुद्ध श्री अवधेश प्रसाद सिंह, तत्कालीन सहायक अभियंता द्वारा पुनर्विलोकन अर्जी समर्पित किया गया है जिसमें उनके द्वारा निम्न तथ्यों के आधार पर आरोप मुक्त करते हुए अधिरोपित दण्ड को समाप्त करने का अनुरोध किया गया है:-

1. संचालन पदाधिकारी द्वारा आरोप पत्र में उद्धृत आरोप सं0-2 बाँध का स्लोप विशिष्टियों के अनुरूप नहीं होने एवं बिना गुण नियंत्रण से जाँच कराये ही कार्यों का भुगतान करने के दोषारोपण को उड़नदस्ता जाँच प्रतिवेदन की कंडिका 3.1.2, 3.4.2 एवं 3.1.3 में उद्धृत बाँध के टॉप की चौड़ाई एवं टॉप लेवल को विशिष्टि के अनुरूप स्थल जाँच में पाये जाने के आधार पर तथा प्राक्कलन में राजस्थानी ट्रैक्टर से मिट्टी भरे जाने का प्रावधान तथा प्राक्कलन में संपीडन का प्रावधान नहीं होने के आधार पर उक्त आरोप प्रमाणित नहीं माना गया है।

2. आरोप सं0-2 में पाईप कलबर्ट की संरचना के गुण नियंत्रण संबंधित जाँच नहीं कराने का मेरे विरुद्ध कोई आरोप नहीं लगाया गया था जो आरोप पत्र से स्वतः स्पष्ट है। परन्तु संचालन पदाधिकारी के मंतव्य से असहमत होते हुए संरचना में कंक्रीटिंग कार्य, ब्रीक वर्क तथा अन्य पक्का कार्य में गुण नियंत्रण से संबंधित कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराये जाने की चर्चा करते हुए द्वितीय कारण पृच्छा किया गया।

3. द्वितीय कारण पृच्छा में नये सिरे से किसी पृथक आरोप का उल्लेख करना नियमानुसार नहीं है क्योंकि आरोप आरोपित के विरुद्ध लगाये जाते हैं। उन्हीं का बचाव बयान उक्त नियमावली 2005 के प्रावधान के अन्तर्गत आरोपित पदाधिकारी से अपेक्षित है एवं आरोपी को पृथक आरोप के संदर्भ में वस्तुस्थिति स्पष्ट करने हेतु अवसर देना न्याय के अनुरूप अपेक्षित है।

श्री सिंह से प्राप्त पुनर्विलोकन अर्जी की समीक्षा सरकार के स्तर पर की गयी। समीक्षा में पाया गया कि आरोप पत्र के आरोप सं0-2 में स्पष्ट उद्धृत है कि बिना गुण नियंत्रण से जाँच कराये ही कार्यों का भुगतान किया गया है। चूँकि शाहपुर पी0 डब्ल्यू0 डी0 रोड से बरहेता धरनी पट्टी रोड तक जमींदारी बाँध के निर्माण कार्य के प्राक्कलन के अनुसार 10 (दस) अदद डबल भेट का पाईप कलबर्ट का निर्माण करने का प्रावधान है अतएव आरोपी का यह कथन कि आरोप में संरचना निर्माण कार्य का बिना गुण नियंत्रण जाँच कराये ही भुगतान करने का आरोप गठित आरोप-पत्र में नहीं था समीचीन प्रतीत नहीं होता है।

जहाँ तक आरोपी का कथन है कि किसी बिन्दु पर आरोपित करने के पूर्व वस्तुस्थिति स्पष्ट करने हेतु अवसर नहीं दिया गया है जो गलत है क्योंकि संचालन पदाधिकारी के मंतव्य से असहमत होते हुए आरोपी से वस्तुस्थिति स्पष्ट करते हुए द्वितीय कारण पृच्छा के माध्यम से अपना पक्ष रखने हेतु मौका दिया गया है एवं आरोपी द्वारा द्वितीय कारण पृच्छा के जवाब में ऐसे कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किये गये जिससे परिलक्षित हो सके कि संरचना निर्माण कार्य का गुण नियंत्रण जाँच कराया गया है एवं इसी आधार पर (साक्ष्य के अभाव) पूर्व की समीक्षा में बिना गुण नियंत्रण के जाँच कराये ही भुगतान करने के आरोप को प्रमाणित माना गया है।

आरोपी का यह कथन कि संचालन पदाधिकारी द्वारा आरोप सं0-2 प्रमाणित नहीं माना गया है एवं नियमावली 2005 के नियम 18 (2) के तहत आरोप से हटकर पृथक आरोप गठित कर दण्ड अधिरोपित करने का प्रावधान नहीं है जिसे स्वीकार योग्य नहीं है क्योंकि नियमावली 2005 के नियम 18 (2) में प्रावधान है कि संचालन पदाधिकारी से जाँच प्रतिवेदन के प्राप्त होने पर अनुशासनिक प्राधिकार यदि वह आरोप के किसी मद पर जाँच प्राधिकार के निष्कर्ष से असहमत हो तो ऐसी असहमति के लिए अपने कारणों को अभिलिखित करेगा तथा ऐसे आरोप से संबंधित स्वयं का निष्कर्ष अभिलिखित करेगा यदि उस प्रयोजनार्थ अभिलेख में उल्लेखित साक्ष्य पर्याप्त हो। उक्त नियम के तहत ही संचालन पदाधिकारी के मंतव्य से असहमत होते हुए असहमति के कारणों को उद्धृत करते हुए आरोपी श्री सिंह से द्वितीय कारण पृच्छा किया गया था।

समीक्षा में यह भी पाया गया कि श्री सिंह, तत्कालीन सहायक अभियंता द्वारा समर्पित पुनर्विलोकन अर्जी में उपर्युक्त तथ्यों के अतिरिक्त कोई नया तथ्य एवं साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है जिससे परिलक्षित हो सके कि संरचना निर्माण कार्य का गुण नियंत्रण की जाँच कराया गया है।

अतः सम्यक समीक्षोपरान्त उपर्युक्त वर्णित तथ्यों के आलोक में श्री सिंह का पुनर्विलोकन अर्जी को अस्वीकार योग्य मानते हुए इनके विरुद्ध पूर्व में अधिरोपित दण्ड “एक वेतन वृद्धि पर असंचयात्मक प्रभाव से रोक” को बरकरार रखने का निर्णय सरकार द्वारा लिया गया है।

तदालोक में श्री अवधेश प्रसाद सिंह, तत्कालीन सहायक अभियंता के पुनर्विलोकन अर्जी को अस्वीकृत करते हुए इनके विरुद्ध प्रमाणित आरोप के लिए अधिरोपित दण्ड यथा “एक वेतन वृद्धि पर असंचयात्मक प्रभाव से रोक” को बरकरार रखा जाता है।

उक्त आदेश श्री अवधेश प्रसाद सिंह, तत्कालीन सहायक अभियंता को संसूचित किया जाता है।

बिहार-राज्यपाल के आदेश से,
गजानन मिश्र,
विशेष कार्य पदाधिकारी।

अधीक्षक, सचिवालय मुद्रणालय,
बिहार, पटना द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित।
बिहार गजट (असाधारण) 633-571+10-डी0टी0पी0।
Website: <http://egazette.bih.nic.in>